This question paper contains 4+2 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

7569

B.A. (Programme)/I **E-II**

HINDI DISCIPLINE—Paper I.

हिंदी अनुशासन-प्रश्नपत्र ।

(हिंदी कविता, नाटक तथा हिंदी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

Note :— The maximum marks printed on the question paper are applicable for the students of the regular colleges (Category 'A'). These marks will, however, be scaled up proportionately in respect of the students of SOL/NCWEB at the time of posting of awards for compilation of result.

टिप्पणी : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक श्रेणी 'A' के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं । तथापि ये अंक नियमित कॉलेजों, NCWEB/SOL के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे ।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

P.T.O.

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8+8

(क) अबिगत-गति कछु कहत न आवै ।

ज्यौं गूंगे मीठे फल को रस अंतरगत ही भावै ।

परम स्वाद सबही सु निरंतर अमित तोष उपजावै ।

मन-बानी कौं अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै ।

रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु निरालंब कित धावै ।

सब बिधि अगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन पद गावै ।

(ख) जैसौ बंध प्रेम को, तैसो बंध न और ।

काठहि भेदै, कमल को, छेद न निकरै भौंर ॥

साँच-झूठ निर्णय करै, नीति-निपुण जो होय ।

राजहंस बिन को करै, क्षीर-नीर कों दोय ॥

(ग) पशु नहीं, वीर तुम,

समर-शूर, क्रूर नहीं,

कालचक्र में हो दबे,

आज तुम राजकुँवर,

समर सरताज !

मुक्त हो सदा ही तुम,

बाधा-विहीन-बंध छंद ज्यों,

डूबे आनंद में सच्चिदानंद-रूप ।

2. कबीर **अथवा** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय लिखिए । 7

3. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 6+6

(i) वृंद के दोहों का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

(*ii*) नागार्जुन की कविताओं के आधार पर उनकी सामाजिक पक्षधरता पर विचार कीजिए ।

(*iii*) 'जयद्रथ वध' में व्यक्त संदेश का विवेचन कीजिए ।

(*iv*) भाव-सौंदर्य की दृष्टि से केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं का मूल्यांकन कीजिए ।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

तुमने लिखा था कि एक दोष गुणों के समूह में उसी तरह छिप जाता है, जैसे चाँद की किरणों में कलंक; परंतु दारिद्र्य नहीं छिपता । सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता । नहीं, छिपता ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है—एक-एक करके नष्ट कर देता है ।

अथवा

परंतु समय निर्दय नहीं है । उसने औरों को भी सत्ता दी है । अधिकार दिए हैं । वह धूप और नैवेद्य के लिए देहली पर रुका नहीं रहा है । उसने औरों को अवसर दिया है । निर्माण किया है । तुम्हें उसके निर्माण से वितृष्णा होती है ? क्योंकि तुम जहाँ अपने को देखना चाहते हो, नहीं देख पा रहे ?

5. नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' की समीक्षा लिखिए । 12

अथवा

मल्लिका की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

6. (क) आदिकाल **अथवा** रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए । 10

(ख) किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 10

(*i*) सूफी काव्य

(*ii*) भारतेंदु युग

(*iii*) प्रगतिवादी कविता ।